UNIVERSITY GRANTS COMMISSION
BAHADUR SHAHZAFAR MARG
NEW DELHI - 110 002.

Minor Research Project

Executive Summary

" The perspective of Hindi on Internet in the present scenario and Cyber Journalism "

Dr. Sureshkumar Kungumal Keswani
Asso.Prof. & H.O.D. (Hindi)
Sitabai Arts, Comm. & Science College, AKOLA

Summary of the Project :

कंप्यूटर के साथ इन्टरनेट व मोबाइल और अन्य तकनीकों के जुड़ाव यानी संचार प्रौद्योगिकी के जुड़ाव ने सूचना क्रांति का विस्फोट कर दिया । इसीलिए यह आज जीवन के हर क्षेत्र में अपना स्थान बनाती जा रही है । सूचना प्रौद्योगिकी के कारोबार का माध्यम बनने ने अनंत संभावनाओं के द्वार पहले ही खोल दिए थे, रही-सही कसर इसके मनोरंजन का साधन बनने ने पूरी की, जिसने छोटे-छोटे बच्चों से लेकर प्रौढ़ों तक को अपने सम्मोहन में जकड़ लिया । इंटरनेट ने तो गृहणियों और बुजुर्गों तक पर अपना रंग चढ़ा दिया ।

नई आर्थिक नीति ने बहुराष्ट्रीय कंपनियों के लिए भारत के बाजार को खोला । विकास का लक्ष्य 'आम आदमी' के स्थान पर 'नव धनाढ्य वर्ग' बन गया । बहुराष्ट्रीय कंपनियों की बाजार पर कब्जा जमाने की गलाकाट प्रतियोगिता ने उन्हें मजबूर किया कि वे लागत घटाएँ । भारतीय मध्यवर्ग के अंग्रेजी पढ़ा लिखा और गैर-महत्त्वाकांक्षी होने ने बहुराष्ट्रीय कंपनियों को सस्ते मजदूर उपलब्ध कराए । यह सही है कि इसके बावजूद हमने अपनी कमजोरी को ताकत में बदल डाला । वाई२के समस्या के समय पूरी दुनिया ने हमारा लोहा माना था । अपने अंग्रेजी ज्ञान के कारण दक्षिण भारत के लोगों ने इसमें शीघ्र ही अपना दबदबा बना लिया । इस दबदबे को भारत में ही नहीं, अमरीका में भी

महसूस किया जाता है । भारतीय अभिजात्य वर्ग के जातिगत अभिमान और उनकी शारीरिक श्रम के प्रति चिरस्थायी घृणा का सूचना प्रौद्योगिकी के विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा । इसके चलते कंप्यूटर तंत्र के विकास में हार्डवेयर की घोर उपेक्षा हुई । नतीजतन हार्डवेयर का मूल्य अन्य देशों की अपेक्षा खासा ज्यादा रहा । जिससे मध्यमवर्ग के आदमी के लिए भी कंप्यूटर खरीदना एक विलासिता ही रहा ।

दूसरी तरफ, हमारे अभिजात वर्ग की जनभाषा से घृणा ने हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं को कंप्यूटर से दूर रखा । कम्प्यूटिंग में हिंदी या अन्य भारतीय भाषाओं के विषय में जो प्रयास किए भी गए, उनका भी इन्होंने प्रचार नहीं किया । और हिंदी कम्प्यूटिंग के संबंध में भ्रमजाल फैलाया । उक्त दोनों कारणों से कंप्यूटर संस्कृति की पैठ समाज में व्यापक और निम्न स्तरों तक नहीं हो पाई । फलस्वरूप इसने भारत में डिजिटल विभाजन पैदा किया, जो लगातार बढ़ता ही जा रहा है । इसने एक ओर कुशल और महँगे श्रम का बढ़ता बाजार बनाया तो दूसरी ओर अकुशल रोजगार का लगभग पूरी तरह खात्मा कर दिया । जिससे हमारे यहाँ पहले से ही मौजूद आर्थिक असमानता की खाई और भी तेजी से चौड़ी होती चली गई ।

इसका एक बुरा असर खुद भारतीय कम्प्यूटिंग पर भी पड़ा ।

अपने अंग्रेजी ज्ञान के कारण शुरुआती दौर में दूसरे एशियाई देशों पर बढ़त बनाने के बावजूद इसने अंततः हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के प्रसार को अवरुद्ध किया । साथ ही हिंदी भाषियों को हीनता ग्रस्त बनाया । जिससे सूचना प्रौद्योगिकी में हमारी चुनौती काफी सीमित रह गई । हार्डवेयर में तो जापान, कोरिया और चीन का दबदबा पहले से ही है, अब सॉफ्टवेयर में भी चीनियों ने चुनौती पेश कर दी है । भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी के सॉफ्टवेयर तक सीमित रहने और उसमें भी अंग्रेजी तक सीमित रहने के कारण सूचना प्रौद्योगिकी का प्रसार समाज के आम तबके नहीं पहुँचा जिससे इसके रचनात्मक विकास में हम अपना योगदान नहीं दे पाए । इतनी बड़ी संख्या में हमारे सूचना प्रौद्योगिकी इंजीनियर होने के बावजूद हम विश्व में चुनौती देने वाले सॉफ्टवेयरों के निर्माण में अभी बहुत पीछे हैं । इस क्षेत्र में हमारी ओर से जो थोड़े बहुत

काम हुए भी हैं वे या तो सरकारी निकायों ने किए हैं या भाषाई प्रौद्योगिकी में किए गए हैं । हालाँकि इसका एक अच्छा परिणाम यह हुआ कि इससे भारत में अच्छी क्वालिटी के उत्पाद आए । और प्रतिद्वंद्विता ने भारतीय कंपनियों को भी क्वालिटी प्रोडक्ट बनाने के लिए बाध्य किया।

सायबर पत्रकारिता नाम से स्पष्ट है यह कंप्यूटर और इंटरनेट के सहारे संचालित ऐसी पत्रकारिता है जिसकी पहुँच किसी एक पाठक, एक गाँव, एक प्रखंड, एक प्रदेश, एक देश तक नहीं बल्कि समूचा विश्व है और जो डिजिटल तंरगों के माध्यम से प्रदर्शित होती है । प्रिंट मीडिया से यह इस रूप में भी भिन्न है क्योंकि इसके पाठकों की संख्या को परिसीमित नहीं किया जा सकता । इसकी उपलब्धता भी सार्वत्रिक है । इसके लिए मात्र इंटरनेट और कंप्यूटर, लैपटॉप, पॉमटॉप या अब मोबाईल की ही जरूरत होती है । इंटरनेट के ऐसा माध्यम से वेब-मीडिया सर्वव्यापकता को भी चरितार्थ करती है जिसमें ख़बरें दिन के चौबीसों घंटे और हफ़्ते के सातों दिन उपलब्ध रहती हैं । वेब पत्रकारिता की सबसे खासियत है उसका वेब यानी तंरगों पर घर होना । अर्थात् इसमें उपलब्ध किसी दैनिक, साप्ताहिक, मासिक पत्र-पत्रिका को सुरक्षित रखने के लिए किसी किसी आलमीरा या लायब्रेरी की जरूरत नहीं होती । समाचार पत्रों और टेलिविज़न की तुलना में इंटरनेट पत्रकारिता की उम्र बहुत कम है लेकिन उसका विस्तार तेज़ी से हुआ है । वाले दिनों में इसका विस्तार बेतार पत्रकारिता यानी वायरलेस पत्रकारिता में होगा जिसकी पहल कुछ मोबाइल कंपनियों द्वारा शुरू भी की जा चुकी है । वेब मीडिया या ऑनलाइन जर्नलिज्म परंपरागत पत्रकारिता से इन अर्थों में भिन्न है उसका सारा कारोबार ऑनलाइन यानी रियल टाइम होता है । ऑनलाइन पत्रकारिता में समय की भारी बचत होती है क्योंकि इसमें समाचार या पाठ्य सामग्री निरंतर अपडेट होती रहती है । इसमें एक साथ टेलिग्राफ़, टेलिविजन, टेलिटाइप और रेडियो आदि की तकनीकी दक्षता का उपयोग सम्भव होता है । आर्काइव में पुरानी चीजें यथा मुद्रण सामग्री, फिल्म, आडियो जमा होती रहती हैं जिसे जब कभी सुविधानुसार पढ़ा जा सकता है । ऑनलाइन पत्रकारिता में मल्टीमीडिया का प्रयोग होता है जिसमें, टैक्स्ट, ग्राफिक्स, ध्वनि, संगीत,

गतिमान वीडियो, थ्री-डी एनीमेशन, रेडियो ब्रोडकास्टिंग, टीव्ही टेलीकास्टिंग प्रमुख हैं । और यह सब ऑनलाइन होता है, यहाँ तक कि पाठकीय प्रतिक्रिया भी । कहने का वेब मीडिया में मतलब प्रस्तुतिकरण और प्रतिक्रियात्मक गतिविधि एवं सब कुछ ऑनलाइन (एट ए टाइम) होता है । परंपरागत प्रिंट मीडिया एट ए टाइम संपूर्ण संदर्भ पाठकों को उपलब्ध नहीं करा सकता किन्तु ऑनलाइन पत्रकारिता में वह भी संभव है - मात्र एक हाइपरलिंक के द्वारा ।

SIGNATURE OF THE

PRINCIPAL INVESTIGATOR

SIGNATURE OF THE

SIGNATURE OF THE PRINCIPAL